GURU KAHAN ART MUSEUM

Announcing Art Exhibition on Samaysaar Drashtant Vaibhav

(16.12.18, Sunday at Songadh)

Samaysaar parmagam by Aacharya Kundkunddev & Atmakhyati Tika (explanation on Samaysaar) by Aacharya Amrutchandra depicted in art form for the first time in Jain history.

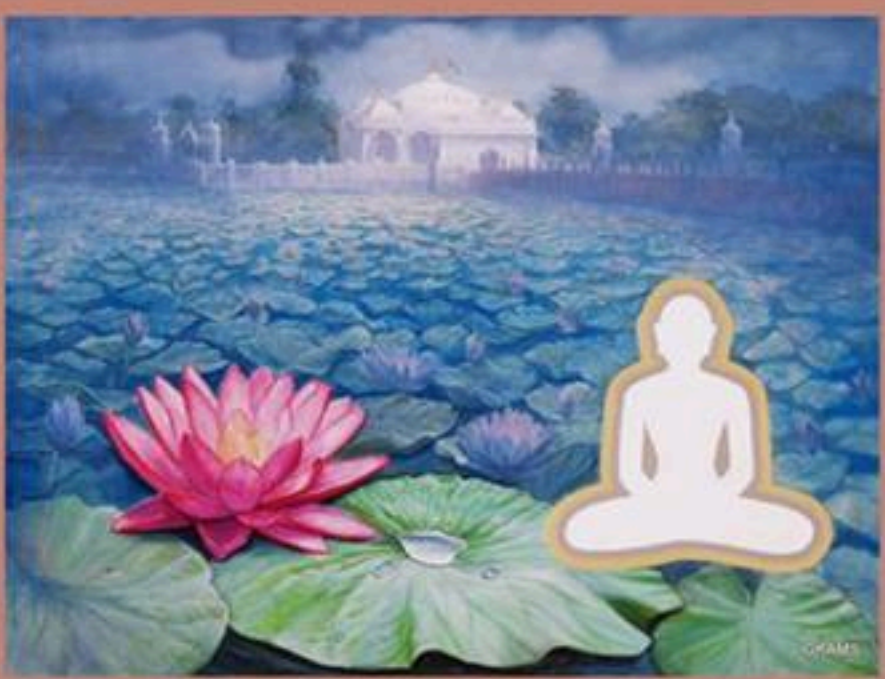

जैसे कमलिनि पत्र जल में डूबा हो तो उसका जल से स्पर्शित होनेरूप अवस्था से अनुभव करने पर जल से स्पर्शित होना भूतार्थ है-सत्यार्थ है; तथापि जल से किंचित मात्र भी न स्पर्शित होने योग्य कमलिनि पत्र के स्वभाव के समीप जाकर अनुभव करने पर जल से स्पर्शित होना अभूतार्थ है-असत्यार्थ है।

उसी प्रकार अनादिकाल से बंधे हुये आत्मा का, पुद्गल कर्मों से बंधने-स्पर्शित होनेरूप अवस्था से अनुभव करने पर बद्ध-स्पृष्टता भूतार्थ है-सत्यार्थ है; तथापि पुद्गल से किंचित मात्र भी स्पर्शित न होने योग्य आत्म-स्वभाव के समीप जाकर अनुभव करने पर बद्ध-स्पृष्टता अभूतार्थ है-असत्यार्थ है। (गाथा-१४ टीका)

ज्यों लोहकी त्यों कनककी जंजीर जकडे पुरुष को।
इस रीत से शुभ या अशुभ कृत कर्म बांधे जीव को॥

Gatha 146

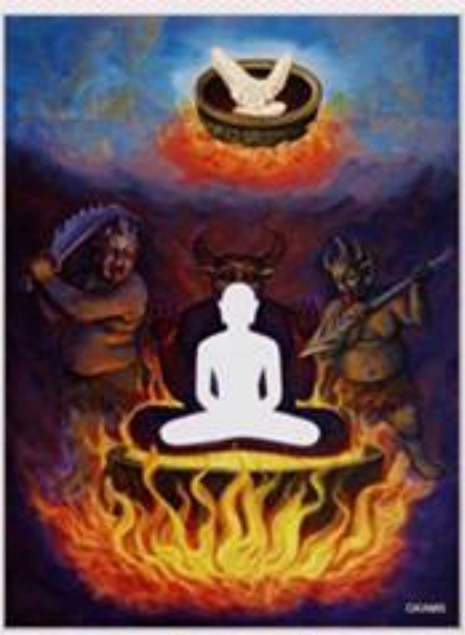

ज्यों अग्नि तप्त सुवर्ण भी निज स्वर्णभाव नहीं तजे।
त्यों कर्म उदय - प्रतप्त भी ज्ञानी न ज्ञानिपना तजे॥

Gatha 184